चोरू की खेती

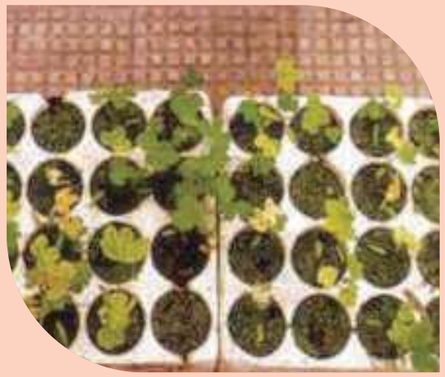

सामान्य नाम	:	चोरू / चोरा
वानस्पतिक नाम	:	एंजेलिका ग्लोका
कुल	:	एपीयेसी
उपयोगी भाग	:	जड़ तथा प्रकन्द
सामान्य उपयोग	:	कब्ज, तालु के अल्सर, पेचिश में इस पौधे का प्रयोग किया जाता है। जड़ों / प्रकन्दों का प्रयोग घावों और गैसटिक दर्द के लिए किया जाता है। इसमें भूखवर्द्धक, वाताहारक, उत्तेजित और स्वेदकारी गुण पाये जाते हैं।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | **फैक्स** : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | **वैबसाईट** : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास हाई एलटीट्यूड प्लांट फिजियोलॉजी रिसर्च सेंटर, एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड द्वारा किया गया है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

चोरू / चोरा

एंजेलिका ग्लोका

कुलः एपीयेसी

- चोरू चिकना, सुगंधित, द्विवार्षिक या बारहमासी, छोटा लगभग एक–दो मीटर लम्बा होता है।
- इसका तना खोखला और जड़ें मोटी प्रकन्दमयी होती हैं।

जलवायु और मिट्टीः

- इसको ठंडे और समशीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है।
- इसकी खेती 2000–3000 मीटर (समुद्र तल से) की ऊँचाई पर की जाती है।
- इसे गहरी समृद्ध मिट्टी एवं नम रेतीली मिट्टी की जरुरत होती है।

उगाने की सामग्रीः

- बीज तथा प्रकन्द

नर्सरी तकनीक

पौध तैयार करनाः

- नवम्बर और दिसम्बर के दौरान बीजों को एकत्रित करके तत्काल ही बोया जाता है।
- सूखे बीजों की अपेक्षा नमी वाले बीजों का अंकुरण अधिक बेहतर होता है।
- यदि बीजों को 24 घंटे पोटेशियम नाईट्रेट से पूर्व उपचार किया जाये तो अंकुरण होने में सहायता मिलती है।

पौध दर और पूर्व उपचारः

एक हेक्टयर भूमि के क्षेत्र में 6.2 किलोग्राम बीजों (50,000 पौधों) की आवश्यकता होती हैं।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोगः

- खेत को जोतकर एवं निराई कर अच्छी तरह से समतल किया जाना चाहिए।
- भेड़ और बकरी की खाद खेती के लिए अच्छी होती है।
- प्रारंभिक अवस्था में लगभग 15–20 मी0 टन वर्मी कम्पोस्ट (केंचुआ) खाद की आवश्यकता होती है।

प्रत्यारोपण और अधिकतम दूरीः

- अप्रैल–मई माह के दौरान 45 सेमी. x 45 सेमी. की दूरी पर बीजों को प्रत्यारोपित करते हैं।
- लगभग 50,000 पौधे एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए प्रर्याप्त होते हैं।

अंतर फसल प्रणालीः

- इस पौधे को कूठ के साथ उगाया जा सकता है।

संवर्धन और रख–रखाव की विधिः

- निराई तथा गुड़ाई समय–समय पर आवश्यकता अनुसार की जानी चाहिए।
- वर्षा ऋतु के दौरान निराई तथा गुड़ाई महीने में कम से कम एक वार आवश्यक है।

सिंचाईः

- शुष्क मौसम के दौरान सप्ताह में दो बार सिंचाई करना लाभदायक होता है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाईः

- प्रत्येक दो वर्ष के पश्चात फसल की कटाई की जा सकती है।
- सितम्बर–अक्टूबर में बीज जब आंशिक रूप से पक जाते हैं तो जड़ों की कटाई की जाती है।

खेती पश्चात् प्रबन्धनः

- बिना अग्र भाग के प्रकंद को पानी के साथ धोया जाता है।
- जड़ों को छोटे–छोटे टुकडों में काटकर आंशिक छायादार स्थान पर सूखने के लिए रखा जाता है।
- सूखी हुई जड़ों को कपड़े के थैलों में भंडारित किया जाता है।

पैदावारः

- गढ़वाल में लगभग 593–600 किलोग्रम प्रति हेक्टयर तक इसकी पैदावार प्राप्त की जाती है।